

- ululare. MAH. 2.1547.: सा सततं वाशते; 1.8433.: सन्तप्यमाना ब्रह्म वाशमाना प्रधावति. — *Part. praes. PAR. N.11.20.*: कुरुमी इव वाशतीम्; MAH. 3.10437.: शकुनेर इव वाशतः; 10493.: हा हताः स्मेति वाशन्यः. (Cf. वच् e वक्, ita वाष् e वाक्.)  
c. उत् deplorare, c. acc. BHATT. 3.32.: उद्वाश्यमानः पितरम्.
- वाष्प *m.* lacryma, in *Sing. solum usurpari videtur. BR. 2. 36. N.17.13. MEGH. 12.*
- वाष्पाय् (*Denom. a praec.*) lacrymare. UR. 84.19.
- वास् *v.* वाष् et वासय्.
- वास *m.* (r. वस् s. अ) 1) habitatio. 2) cavea avis. UR. 35.5. 3) i. q. अधिवास. (Hib. *fos* «a delaying, staying, resting, cessation».)
- वासय् (*Denom. a वास sgf. 3.*) odoribus imbuere. अधिवासय् (*Denom. ab अधिवास id.* UR. 74.20.: मन्दारपुष्पैर् अधिवासितायाम् ... शिषायाम्.
- वासर *m.* (fortasse e वा sicut, in hoc comp. similiter, et सर् iens, v. वत्सर) dies. UP. 21.
- वासव *m.* (a वसु *Vasus* q. v. suff. अ) *Vasavus*, cognomen *Indri. IN. 2.22.*
- वासस् *n.* (r. वस् induere s. अस्) vestis. SU. 4.9. N. 9. 14.19.
- वासिन् (r. वस् habitare s. इन्) *Adj. habitans. Subst. m. habitator, in fine comp. SU. 2.8. N. 7.17.*
- वासुकि *m.* *Vāsukis*, rex serpentum. BH. 10.28.
- वास्तव्य (a वास्तु domus s. य) domum, domicilium habens, habitans. HIT. 34.17.
- वास्प i. q. वाष्प.
- वाह् 1. *A.* (प्रयत्ने *κ.* यत्ने *ν.*; scribitur etiam बाह्) operam dare, adniti. *Caus. occupare, adhibere, uti. MAN. 3. 68.*: यास्तु (सूनाः) वाहयन् (schol. स्वकार्ये योजयन्); 4. 86.: दशसूनासहस्राणि यो वाहयति (schol. स्वार्थे व्यापारयति.)  
c. सम् fricare. MAH. 3.11005.: पादौ ... कराभ्याङ्ग किपाज्ञाताभ्यां शनकैः संववाहतुः. — *Caus. id. SAK. 95. 9. R. Schl. II. 91.52.*
- वाह *m.* (r. वह् trahere, vehere) 1) equus. DR. 8.12. A. 4. 12. 2) currus. A. 1.1.
- वाहक *m.* (a *Caus. r. वह् s. अक*) rector, moderator currus etc. N. 22.1.
- वाहन *n.* (a *Caus. r. वह् trahere, vehere*) 1) actio moderandi equos etc. N. 15.2. 2) currus. N. 2.26. in comp. *BAH. 3*) equus. R. Schl. I. 62.1. 68.1. in fine comp. *BAH.* (Cf. वाह, germ. vet. *wagan*, Them. *wagana* currus; hib. *feun* id.)
- वाहिन् (r. वह् s. इन्) vehens, ferens, in fine comp. HIT. 16.42.34.2.
- वाहिनी *f.* (a वाह s. इन् in fem.) exercitus. RAGH. 7.33.
- वाङ्ग *v.* बाङ्ग.
- वाङ्गक (r. वह् s. उक्) nom. pr. N. 15.2.5.
- वाह्य (form. anom. a वहिस् extra suff. य) externus. BH. 5.21.87. DR. 7.18.
- वाह्यतस् *Adv.* (a praec. s. तस्) extra, extrinsecus. N. 9.7.
1. वि *Praep. insep. v. gr. 111.* (Germ. vet. *wi-dar* contra, adversum, cum suff. compar., v. gramm. comp. 294; pers. *بی* *bi* sine, e. c. *بیباک* metu vacuus, intrepidus; fortasse lat. *ve-* (*vecors, vesanus*); lith. *be* sine; slav. *be* id. nisi hoc pertinet ad वहिस् q. v.)
2. वि *m.* (fortasse a r. वय्, correpto अय् in इ, nisi a वी) avis. NALOD. 1.28. (Cf. वयस् avis, lat. *avis*.)
- विंश vigesimus (v. gr. 259.)
- विंशति *f.* (ut mihi videtur, pro द्विदशति, e द्वि duo et दशति a दशन decem, ejecto अ et mutato दू in nasalem, v. त्रिंशत् et cf. lat. *viginti*, gr. *εἰκατή, εἰκοσι*, hib. *fichead*, cambro-brit. *ugaint*.)
- विकच (ut videtur, a r. कच् praef. वि s. अ) expansus, evolutus, apertus, de floribus. IN. 5.8.
- विकट (*BAH. e वि et कट* stragulum) expers straguli. N. 10.6.
- विकत्यन *n.* (r. कत्य् praef. वि s. अन) jactatio, gloria-tio. HIT. 100.13.
- विकर्मन् *n.* (*KARM.* e वि et कर्मन् opus) secessio ab opere. BH. 4.17.